।। श्री रासपंचाध्यायी ।।

वंदन करुं कृपानिधान श्रीशुक शुभकारी ।। शुद्ध ज्योतिमय रूप सदा सुन्दर अधिकारी ।।१।।
हरि लीला रसमत्त मुदित नित विचरत जग में ।। अद्भुत गति कहूं नहीं अटक व्है निकसे मग में ।।२।।
नीलोत्पलदल श्याम अंग नव यौवन भ्राजे ।। कुटिल अलक मुखकमल मानो अलि अवलि विराजे ।।३।।
ललित भाल विशाल दिपत मानों निकर निशाकर ।। कृष्णभक्ति प्रतिबन्ध तिमिरकूं कोटि दिवाकर ।।४।।
कृपा रंग रस एन नयन राजत रतनारे ।। कृष्ण रसासव पान अलस कछु धूम घुमारे ।।५।।
श्रवण कृष्ण रस भवन गंड मंडल भल दरसे ।। परमानंद सो मिली सुमंद मुसकनि मधु बरसे ।।६।।
उन्नत नासा अधर बिंब शुक की छबि छीनी ।। तिन बिच अद्भुत भांत लसत कछु एक मसि भीनी ।।७।।
कंबु कंठ की रेख देख हरि धर्म प्रकाशे ।। काम क्रोध मद लोभ मोह जिहीं निरखत नाशे ।।८।।
उरवरपर अति छबि की भीर कछु वरणी न जाई ।। जिहीं भीतर जगमगत निरंतर कुंवर कन्हाई ।।९।।
सुन्दर उदर उदार रोमावलि राजत भारी ।। हियै सरोवर रस भर चली मानों उमग पनारी ।।१०।।
ता रस की कुण्डका नाभि अस शोभित गहरी ।। त्रिवली तामें ललित भांत जानो उपजत लहरी ।।११।।
अति सुदेश कटि देश सिंघ सघन शोभित अस ।। युवजन मन आकर्षत बरसत प्रेम सुधा रस ।।१२।।
गूढ जानु आजान बाहु मद गज गति लोले ।। गंगादिकन पवित्र करन अवनी पर डोलें ।।१३।।
सुन्दर पद अरविन्द मधुर मकरंद मुक्ति जहां ।। मुनि मन मधुकर निकर सदा शोभित लोभी तहां ।।१४।।
जब दिनमणी श्रीकृष्ण दृगनते दूर भये दुरि ।। पसर पर्यो अंधियार सकल संसार घुमड़ धुरि ।।१५।।
तिमिर ग्रसित सब लोक ओक लखि दुखित दयाकर ।। प्रगट कियो अद्भुत प्रभाव भागवत विभाकर ।।१६।।
जे संसार अंधियार आगार में मग्न भये वर ।। तिन हित अद्भुत दीप प्रगट कीनोजु कृपाकर ।।१७।।
श्रीभागवत शुभनाम परम अभिराम परम गति ।। निगम सार शुक सार बिना गुरू कृपा अगम गति ।।१८।।
ताहीमें पुनि अति रहस्य यह पंचाध्यायी ।। तन में जैसे पंच प्राण अस शुकमुनि गाई ।।१९।।
परम रसिक एक मित्र मोहि तिन आज्ञा दीनी ।। ताही ते यह कथा यथामति भाषा कीनी ।।२०।।
दोहा– श्रीशुकमुनि रूप अनूप है सो बरणे कवि नंद ।।
अब श्रीवृंदावन बरणहूं जहां श्रीवृंदावनचंद ।।२१।।
अब सुन्दर श्रीवृंदावन को गाय सुनाऊं ।। सकल सिद्धिदायक नायकपें सबसिद्धि पाऊं ।।२२।।
श्रीवृंदावन चिद् घन छबि कछु वरणि न जाई ।। कृष्ण ललित लीला के काज धर रह्यो जड़ताई ।।२३।।
जहां नग खग मृग लता कुंज बीरुध तृण जेते ।। नाहिन काल गुण प्रभाव सदा शोभित हैं तेते ।।२४।।
सकल जंतु अविरूद्ध जहां हरि मृग संग चरही ।। काम क्रोध मद् लोभ रहित लीला अनुसरही ।।२५।।
सब ऋतु संत वसन्त लसत जहां दिन मणी शोभा ।। आन वनन जाकी विभूतिकर शोभित शोभा ।।२६।।
ज्यों लक्ष्मी निज रूप अनूप चरण सेवत नित ।। भ्रूविलास ते ज्यों विभूति जगमग रही जित तित ।।२७।।

श्रीअनंत महिमा अनंत को वरण सके कवि ।। संकर्षण सो कछुक कही श्रीमुख जाकी छबि ।।२८।।
देवनमें श्रीरमारमण नारायण प्रभु जस ।। वननमें श्रीवृन्दावन सब दिन शोभित है अस ।।२९।।
या वन की वर वानिक या वन ही बनि आवे ।। शेष महेश सुरेश गनेशहु पार न पावे ।।३०।।
जहां जेतिक द्रुम जात कल्पतरु सम सब लायक ।। चिन्तामणी सी भूमि सबै चिन्तत फल दायक ।।३१।।
तिन मधि एक कल्पतरु लग रही जगमग जोती ।। पत्र मूल फल फूल हीरामणि मोती ।।३२।।
तिन मध तिनकी गंध लुब्ध अस गान करत अलि ।। वर किन्नर गन्धर्व अप्सरा तिन पर गई बलि ।।३३।।
अमृत फुहि सुख गुही अति सुही परत रहत नित ।। रास रसिक सुन्दर पिय के श्रम दूर करन हित ।।३४।।
ता सुरतरु में अवर एक अद्भुत छबि छाजे ।। शाखा दल फल फूलन हरि प्रतिबिम्ब विराजे ।।३५।।
ता तर कोमल कनक भूमि मणिमय मोहित मन ।। देखियत सब प्रतिबिंब मानों धर में दूसरो वन ।।३६।।
थलज जलज झलमलत ललित बहु भ्रमर उड़ावे ।। उड उड परत पराग कछु छबि कहत न आवे ।।३७।।
श्रीयमुनाजी प्रेम भरी नित बहत सु गहरी ।। मणि मंडित बहु भांत दूर लौ परसत लहरी ।।३८।।
तहां एक मणिमय वितस्त को संकु सुभग अति ।। तापर षोडस दलसरोज अद्भुत चक्राकृति ।।३९।।
मध्य कमनीय करणिका सब सुख सुन्दर कंदर ।। तहां राजत व्रजराज कुंवरवर रसिक पुरंदर ।।४०।।
निकर विभाकर द्युति मेटत शुभ कौस्तुभ मणि अस ।। सुन्दर नंद कुंवर उर लागत रुचिर उडु जस ।।४१।।
मोहन अद्भुत रूप कहत न आवे छबि ताकी ।। अखिल अंड व्यापीजु ब्रह्म आभा है जाकी ।।४२।।
परमात्मा परब्रह्म सबनके अंतर्यामी ।। नारायण भगवान धर्म कर सबके स्वामी ।।४३।।
बाल कुमार पौगंड धर्म आक्रांत ललित तन ।। धर्मी नित्य किशोर कान्ह मोहत सबको मन ।।४४।।
कण्ठ मुक्तनकी माल ललित वनमाल धरे पिय ।। मंद मधुर हंस पीत वसन फरकत कर खत हिय ।।४५।।
अस अद्भुत गोपाल बाल सब काल बसत जहां ।। याहीतें वैकुंठ वैभव कुण्ठित लागत तहां ।।४६।।
यद्यपि सहज माधुरी विपिन सब दिन सुखदाई ।। तदपि रंगीली शरद समय मिल अति छबि पाई ।।४७।।
ज्यों अमोल नग जगमगाय सुन्दर जराय संग ।। रूपवंत गुणवंत बहुरि भूषण भूषित अंग ।।४८।।
रजनी मुख सुख देत ललित प्रफुल्लित तु मालती ।। ज्यों नवयौवन पाये लसत गुणवती बालती ।।४९।।
छबि सों फूले फूल अवर अस लगी लुनाई ।। मानो शरद की छपा छबीली विहंसत आई ।।५०।।
ताहि समय उडुराज उदित रस रास सहायक ।। कुमकुम मंडित प्रिया वदन जानों नागरि नायक ।।५१।।
कोमल किरण अरुण वन में व्यापि रही यों ।। मनसिज खेल्यो फाग घुमड घुर रह्यो गुलाल ज्यों ।।५२।।
फटक छटा सी किरण कुंज रंध्रन जब आई ।। मानों वितनु वितान सुदेश बनाय तनाई ।।५३।।
मंद मंद चल चारू चन्द्रमा अति छबि पाई ।। उझकत है जानों रमारमण पिय कौतुक आई ।।५४।।
तब लीनी करकमल योगमाया सी मुरली ।। अघटित घटना चतुर बहोर अधरामृत जुरली ।।५५।।
जाकी ध्वनितें अगम निगम प्रगटे वडनागर ।। नादब्रह्म की जननी मोहनी सब सुख सागर ।।५६।।
पुनि मोहन सो मिली कछुक कल गान कियो अस ।। वाम विलोचन बाल तिनके मन हरण होय जस ।।५७।।
मोहन मुरली नाद श्रवण सुन्यो सब किनही ।। यथातथा विधि रूप तथा विधि परस्यो तिनहीं ।।५८।।

तरणी किरण ज्यों मणि पषाण सबहिन को परसे ।। सूर्यकांत मणि बिना नहीं कहुं पावक दरसे ।।५९।।
सुनत चली व्रजवधू गीत ध्वनि को मारग गहि ।। भवन भीत द्रुम कुंज पुंज कितहू अटकी नहिं ।।६०।।
नादामृत को पंथ रंगीलो सूक्षम भारी ।। तिहि व्रज तिय मग चली आन कोऊ नहिं अधिकारी ।।६१।।
शुद्ध प्रेममय रूप पंचभूतन ते न्यारी ।। तिन्हें कहा कोउ गहें ज्योति सी जग उजियारी ।।६२।।
जो रुक गई घर अति अधीर गुणमय शरीर बस ।। पुण्य पाप प्रारब्ध संच्यो तन नहिन पच्यो रस ।।६३।।
परम दुःसह श्रीकृष्ण विरह दुःख व्याप्यो तिन में ।। कोटि वरस लगि नरक भोग अघ मुक्ते छिन में ।।६४।।
पुनरंचक धरि ध्यान पियहि परिरंभ दियो जब ।। कोटि स्वर्ग सुख भुक्ते क्षीण मंगल कीने सब ।।६५।।
धातु पात्र पाषाण परस कंचन व्है सोहे ।। नंद सुवन सों परम प्रेम यह अचरज को हैं ।।६६।।
ते पुनि तिहि मग चली रंगीली त्यज गृह संगम ।। मनु पिंजरन ते घुटे छुटे नव प्रेम विहंगम ।।६७।।
केतिक तरुणी गुणमय शरीर तिहिं सहित चली दुक ।। मात पिता पति बंधु रहे झुक नाहिन रही रुक ।।६८।।
श्रावण सरिता रुके नहिं करे कोटि यत्न अति ।। कृष्ण हरे जिनके मन ते क्यों रुके अगम गति ।।६९।।
चलत अधिक छबि फबत श्रवण मणिकुंडल झलके।।शंकित लोचन चपल चारु अरु विलुलित अलके।।७०।।
यद्यपि कहूं के कहूं वधुन आभरण बनाये ।। हरि पिय पें अनुसरत जहां के तहां चलि आये ।।७१।।
कहुं देखियत कहुं नहिन वधू वन बीच बनी यों ।। विजुरन की सी पांत सघनवन मांझ चलत यों ।।७२।।
आय उमग सों मिली रंगीली गोप वधू अस ।। नंद सुवन सुन्दर सागर सों प्रेम नदी जस ।।७३।।
परम भागवत रत्न रसिक जू परीक्षित राजा ।। प्रश्न पक्यो रस पुष्टि करन निज सुख के काजा ।।७४।।
श्रीभागवत को पात्र जान जग के हितकारी ।। उदर दरी मे करी कान्ह जाकी रखवारी ।।७५।।
जाको सुन्दर श्याम कथा छिन छिन नई लागे ।। ज्यों लम्पट पर युवति बात सुन सुन अनुरागे ।।७६।।
अहों ! मुनि क्यों गुणमय शरीर सो पाये हैं हरि ।। जान भजे कमनीय कांत नहिं ब्रह्मभाव करि ।।७७।।
तब कह्यो श्रीशुकदेव अहो यह अचरज नाहीं ।। सर्वभाव भगवान कान्ह जिनके हिय मांही ।।७८।।
परम दुष्ट शिशुपाल बालपनतें निंदक अति ।। योगिन जो गति दुर्लभ सुलभ पाई हैं सो गति ।।७९।।
याही रस ओपी गोपी सब त्रियन ते न्यारी ।। श्रीकमलनयन गोविन्द चन्द्र की प्राण सु प्यारी ।।८०।।
तिनके नूपुर नाद सुने जब परम सुहाये ।। तब हरि के मन नयन सिमिट सब श्रवणन आये ।।८१।।
रुनक झुनक पुन छबीली भांत सब प्रगट भई जब ।। पियके अंग अंग सिमिट मिले है छबीले नैन तब।।८२।।
कुंजन कुंजन निकसत शोभित वर आनन अस ।। तम के कोन मध्यते निकर राका मयंक जस ।।८३।।
सबके मुख अवलोकत पियके नयन बने यो ।। बहोत शरद शशि मांझ अरबरे द्वै चकोर ज्यों ।।८४।।
अति आदर कर लई भई ठाड़ी चहुं दिश अनु ।। छबीली छटन मिलि घेर मंजुल घन मूरति जनु ।।८५।।
नागर नगधर नंद चंद हंसे मंद मंद तब ।। बोले बांके बेन प्रेम के परम एन तब ।।८६।।
उज्जवल रस को यह स्वभाव बांकी छबि पावे ।। बंक कहन अरु बंक चहन अति रसहिं बढावे ।।८७।।
ये सब नवल किशोरी गोरी भरी प्रेम रस ।। ताते समझ न परी करी प्रिय प्रेम विवश अस ।।८८।।
जैसे सुन्दर नायक रूप गुण रसिक महा हे ।। सब गुण मिथ्या होय नेक जो बंक न चाहे ।।८९।।

कोउक वचन कहत नरम के उर संभार कर ।। कोऊ कहे त्रिय धर्म भेदक सुन्दर वर ।।९०।।
लाल रसाल के बंक वचन सुन चकित भई यों ।। बाल मृगिन की माल सघन वन भूल परी ज्यों ।।९१।।
मंद परस्पर हंसी लसी तिरछी आंखियां अस ।। रूप उदधि इतराय रंगीली मीन पांत जस ।।९२।।
जब पिय कह्यो घर जाऊ अधिक चित चिंता बाढी ।। पुतरिन की सी भांति रह गई इकटक ठाड़ी ।।९३।।
दुःख के बोझ छबि सीम ग्रीव नय चली नाल सी ।। अलक अलिन के भार नमित जनों कमलमाल सी।।९४।।
हिय भर विरह हुताश उसास निशंक आवत भर ।। चले है कछुक मुरझाय मधु भरे अधर बिंब वर ।।९५।।
जब बोली व्रजबाल लाल मोहन अनुरागी ।। सुन्दर गद्‌गद् गिरा गिरीधरे मधुरी लागी ।।९६।।
अहो मोहन अहो प्राणनाथ सुन्दर सुखदायक ।। क्रूर वचन जिन कहो नाहि यह तुम्हारे लायक ।।९७।।
जब कोऊ पूछे धर्म ताही सों कहिये हो पिय ।। बिन ही पूछे धर्म किते कहिये दहिये हिय ।।९८।।
धर्म नेम जप तप व्रत सब को फल हि बतावे ।। यह कहुं नाहिन सुनी फलहि फिर धर्म सिखावे ।।९९।।
और तुम्हरो वह रूप धर्म के धर्महि मोहे ।। धरमन के तुम धर्म भरम यह आगे को हे ।।१००।।
तेसिय पिय की मुरली जुरली अधरसुधा रस ।। सुन निज धर्म न तजे तरुणि त्रिभुवन मे को अस ।।१०१।।
नगन खगन को मृगन को कैसो धर्म रह्यो है ।। छाने व्है रहो पिय न अब कछु जात कह्यो है ।।१०२।।
यह तुम्हरे करकमल महा दूती जो मुरली ।। राखे किनके धर्म अवर अधरन सूं जुरली ।।१०३।।
घन के धर्म न रहें पुलक तन चले ठोर ते ।। खग मृग गौ वच्छ मच्छ कच्छ ते रहे कोर ते ।।१०४।।
सुन्दर पिय को वदन निरख के को नहि भूले ।। रूप सरोवर मांझ शरद अंबुज जनु फूले ।।१०५।।
कुटिल अलक मुखकमल मानों मधुकर मतवारे ।। तिनमे मिल गये चपल नयन मन मधुप हमारे ।।१०६।।
चितवन मोहन मंत्र भ्रौंह जानो मन्मथ फांसी ।। निपट ठगोरी आहि मंद मृदु मादिक हांसी ।।१०७।।
अधरसुधा के लोभ भई हम दासी तिहारी ।। ज्यों लुब्धी पद कमला नवला चंचल नारी ।।१०८।।
जो न देहो अधरामृत तो सुनहो सुन्दर हरि ।। करि हें यह तन भस्म विरह पावक में कूद परि ।।१०९।।
पुनि पिय पदवी पाय बहुरि धरि हे सुन्दर अंग ।। निधरक व्है यह अधरामृत पीवत फिरहे संग ।।११०।।
सुन गोपी के प्रेम वचन आंच सी लागी जिय ।। पिघल चल्यो नवनीत मीत नवनीत सदृश हिय ।।१११।।
विहंस मिले नंदलाल निरख व्रजबाल विरह दुःख ।। यद्यपि आत्माराम रमत भये जान अधिक सुख ।।११२।।
विहरत विपिन विहार उदार रसिक नंदनंदन ।। नव कुमकुम घनसार चारु चरचत तन चंदन ।।११३।।
अद्भुत शामल रुप अंग बन्यो पीत वसन तनु ।। मूरत धरे श्रृंगार प्रेम अंबर ओढे जनु ।।११४।।
विलुलित उर वनमाल लाल जब चलत चाल वर।। कोटि मदन की भीर उठत छबि लुंठत चरण तर।।११५।।
व्रजयुवती कर मंडल मोहनलाल फिरत वन ।। अपनी द्युति के उजरे उडुपति जनु खेलत घन ।।११६।।
कुंजन कुंजन डोलत जानो घन तें घन आवत ।। लोचन तृषित चकोरन के चित चोंप बढावत ।।११७।।
सुभग सरिता के तीर धीर बलवीर गयें जहां ।। कोमल मलय समीर छविन की महाभारी जहां ।।११८।।
कुसुम धूर धूंधर कुंज छबि पुंजन छाई ।। गुंजत मंजु मलिंद वेणु जनु बजत सुहाई ।।११९।।
इत मुकलत मालती चारु चंपक चित चोरत ।। उत घनसार तुसार मिलि मंदार झकोरत ।।१२०।।

इत लवंग नवरंग एलची झेल रही रस ।। उत कुरबक केवरो केतकी गंध बंध वस ।।१२१।।
इत तुलसी छबि हुलसी छांडत परमल लपटें ।। उत कमोद आमोद मोद भर भर सुख दपटे ।।१२२।।
विलसत विविध विलास हास करसूं कुच परसत ।। तरसत प्रेम अनंग रंग नव घन ज्यों बरसत ।।१२३।।
फूलन माल बनाय लाल पहरत पहरावत ।। सुमन सरोज सुधारत ओज मनोज बढावत ।।१२४।।
उज्जवल मृदुल वालुका कोमल सुभग सुहाई ।। श्रीयमुनाजू निज तरंग करसों जु बनाई ।।१२५।।
तब आयो यह काम पंच शर कर हे जाके ।। ब्रह्मादिक को जीत बढ़ रह्यो अति मद ताके ।।१२६।।
निरख व्रजवधू संग रंग भीने किशोर तन ।। आयो हरि मन मथन उलट मथ्यो मन्मथ को मन ।।१२७।।
मुरझ पर्यो तहां मेन कहूं धनुष कहूं विशिख वर ।। रति देखत पति दशा भीत भई मारत उर कर ।।१२८।।
पुन पुन पिय आलिंगत रोवत अति अनुरागी ।। मदन को बदन चुवाय अमृत भुज भर ले भागी ।।१२९।।
अस अद्भुत मोहन पिय सों मिली गोप दुलारी ।। अचरज नाहिन गर्व होय गिरधर जू की प्यारी ।।१३०।।
रूप भरी गुण भरी भरी पुन परम प्रेम रस ।। क्यों न करे अभिमान कान्ह मोहन जिनके वश ।।१३१।।
जहां नदी नीर गंभीर भले तहां भंवरा परही ।। छिल छिल सलिल न परे परे तो छबि नहिं करही ।।१३२।।
प्रेमपुंज वर्धन के काज व्रजराज कुंवर पिय ।। मंजु कुंज में तनक दुरे अति प्रेम भरे हिय ।।१३३।।
।।इति रासक्रीडा वर्णने प्रथमोध्याय।।
मधुर वस्तु जो खाय निरन्तर सुख तो भारी ।। बिच बिच अमल कटु तिक्त तो अति रुचिकारी ।।१३४।।
ज्यों पट पुट के दिये निपट अति रस ही बढे रंग ।। तेसे रंचक विरह प्रेम के पुंज बढे अंग ।।१३५।।
जिनके नयन निमेष ओट कोटिक युग जाही ।। तिनकूं गहवर कुंज ओट दुःख गणना नाहीं ।।१३६।।
ठगीसी रही व्रजबाल लाल गिरधर पिय विन यों ।। निधन महाधन पाय बहुर फिर जाय भई त्यों ।।१३७।।
व्है गई विरह विकलता बूझत द्रुमवेली वन ।। को जड़ को चैतन्य कछु न जानत विरहीजन ।।१३८।।
हे मालती हे जाति यूथके सुन दे हित चित ।। मान हरन मन हरन लाल गिरिधरन लहे हित ।।१३९।।
हे केतकी इतते चितये कित हूं पिय रूसे ।। किधों नंदनंदन मंद मुसक तिहारे मन मुसे ।।१४०।।
हे मुक्ताफल वेली धरे मुक्ताफल माला ।। कहूं देखे नयन विशाल मोहना नंद के लाला ।।१४१।।
हे मंदार उदार वीर कर वीर महामति ।। देखे कहुं बलवीर धीर मन हरण धीर गति ।।१४२।।
हे चंदन दुःख कंदन सबकी जरन सिरा बहु ।। नंदनंदन जगवंदन चंदन हमहि बतावहु ।।१४३।।
बूझोरी इन लतन फूल रही फूलन जोई ।। सुन्दर पिय के परस बिना यह फूल न होई ।।१४४।।
हें सखी यह मृग वधू इन्हें कोउ पूछो अनुसरि ।। डहडहे इनके नयन अबहि कहूं देखे हें हरि ।।१४५।।
अहो सुभग वन सुगंध पवन नेसिक थिर रहि चलि ।।सुखके भवन दुःखदवन रवन कहूं इत चितये बलि।१४६
अहो कदंब अहो अंब नीम क्यों रहे मौन गहि ।। अहो बट तुंग सुरंग वीर कहू तें इत उत लहि ।।१४७।।
अहो अशोक हर शोक लोक मणि पियहि बतावहु ।।अहो फनस शुभ सनस मरत त्रिय अमृत पिवावहु।१४८।।
यमुना निकट के विटप पूछ भई निपट उदासी ।। क्यों कहिहें सखी महा कठिन तीरथ के वासी ।।१४९।।
अहो कमल शुभ करण वरण कहूं तें हरि निरखे ।। कमल माल वनमाल कमल कर अति ही हरखे।।१५०।।

अहो अवनी नवनीत चोर चितचोर हमारे ।। राखे किते दुराय बताइ देहु प्राण पियारे ।।१५१।।
हे तुलसी कल्याणि सदा गोविन्द पद प्यारी ।। क्यों न कहों सखी नंदसुवन सो दशा हमारी ।।१५२।।
जहां आवत तम पुंज कुंज गहवर तरु छांही ।। अपने मुख चांदने चलत सुन्दरि तिहि मांही ।।१५३।।
यह विधि वन घन ढूंढ बूझ उनमद् की नाई ।। करन लगी मन हरण लाल लीला मन भाई ।।१५४।।
मोहन लाल रसाल की लीला इनही सोहे ।। केवल तन्मय भई कछु न जाने हम को हे ।।१५५।।
हरि की सी चलन विलोकन हरि की सी बोलन हेरन ।।हरि की सी गायन घेरन टेरन चहुं पट फेरन ।।१५६।।
हरि की सी वन तें आवन गावन अति रस रंगी ।। हरि की सी कौतुक रचन नचन नित ललित त्रिभंगी ।।१५७
कोउ गिरिवर अंबर को कर धर बोलत हें तब ।। निडर इनहिं तर रहो ग्वाल गोपी गायन सब ।।१५८।।
भृंगी भयते भृंग होय यह कीट महा जड़ ।। कृष्ण प्रेम ते कृष्ण होय कछु नहिं अचरज बड़ ।।१५९।।
जो रज अजकमला शिव खोजत योजत जोगी हिय ।। सो रज वंदन करन लगी सिर धरन लगी त्रिय।।१६०।।
जहां निरखे ढिग जगमगात प्यारी पिय के पग ।। चिते परस्पर चकित भई जुर चली तिही मग ।।१६१।।
चकित भई सब कहें कौन यह बड़भागिन अस ।। परम कांत एकांत पाय पीवत जु अधर रस ।।१६२।।
पुनि आगे चल अवलोकी नव पल्लव श्रेणी ।। जहां पिय कुसुम ले सुहस्त सों गूंथी वेणी ।।१६३।।
तहां पायो एक मंजु मुकुर मणि जटित विलोलें ।। तिहि बूझत व्रजबाल विरह भर्यो सोऊ न बोले ।।१६४।।
तर्क करत आपस में अहो यह क्यों कर लीनों ।। तिनमे कोऊ तिनके हिय की जिन उत्तर दीनों ।।१६५।।
बेनी गुहन समय छबीले बैठे पीछे जब ।। सुन्दर वदन विलोकत सुख को अंतर भयो तब ।।१६६।।
तातें मंजुल मुकर सुकर ले वाल दिखायो ।। श्रीमुख को प्रतिबिंब सखी तब सन्मुख आयो ।।१६७।।
धन्य कहत भई ताहि नाहि कछु मनमे कोपी ।। निर्मत्सर जे संत तिनकी चूड़ामणि गोपी ।।१६८।।
इन नीके आराधे हरि ईश्वर वर जोई ।। तातें अधर सुधारस निधरक पीवत सोई ।।१६९।।
सोऊ पुनि अभिमान भरी तब कहन लगी तिय ।। मोते चल्यो न जात जहां तुम चलन कहत पिय ।।१७०।।
पुनि आगे चलि तनक दूर देखी सोई ठाढ़ी ।। जासो सुन्दर नंदसुवन पिय अति रति बाढ़ी ।।१७१।।
गोरे तनकी जोत छूट छबि छाय रही धर ।। मानो ठाड़ी कनक वेली कंचन अवनी पर।।१७२।।
ज्यों घन ते बिछुरी बिजुरी नौतन छबि काछें ।। किधों चन्द्र सों रूस चन्द्रिका रहि गई पाछे ।।१७३।।
नयनन ते जलधार हार धोवत धर धावत ।। भ्रमर उड़ाय न सकत वास वश मुख ढिंग आवत ।।१७४।।
क्वासि क्वासि पिय महाबाहु यों वदत अकेली ।। महाविरह की ध्वनि सुन रोवत खग मृग वेली ।।१७५।।
ता सुन्दरि की दशा देख कछु कहत न आवे ।। विरह भरी पुतरी होय तो कछु छबि पावे ।।१७६।।
धाय भुजन भर लई सबन ले ले उर लाई ।। मानो महानिधि खोय मध्य आधी निधि पाई ।।१७७।।
कोऊ चुंबत मुखकमल कोऊ भ्रूभाल सु अलके ।। जिनमें पिय संगम की मंजुल श्रमजल झलके ।।१७८।।
पोछत अपने अंचल रुचिर दृगंचल तियके ।। पीक भरे सुकपोल लोल रदक्षत सु पियके ।।१७९।।
तिहि ले तहां ते अवर बहुर यमुना तट आई ।। तिहिं नंदनंदन जगवंदन पिय लाड़ लडाई ।।१८०।।
।। इति रासक्रीडा वर्णने द्वितीयोध्यायः ।।

कहन लगी अहो कुंवर कान्ह व्रज प्रगटे जबते ।। अवधि भूत इंदिरा अलंकृत होय रही तबते ।।१८१।।
सबन सो सब सुख बरखत शशि ज्यों बढत दिहारी ।। तिन में यह पुनि गोपवधू पिय निपट तिहारी ।।१८२।।
नयन मूंदवो महा शस्त्र ले हांसी फांसी ।। मारत हो कित सुरतनाथ बिन मोल की दासी ।।१८३।।
विष जल हु ते व्याल अनल ते दामिनि झर ते ।। क्यों राखी नहिं मरन दई नागर नगधर ते ।।१८४।।
जब तुम यशोदा सुवन भये पिय अति इतराने ।। विश्व कुशल के काज विधना विनती करि आने ।।१८५।।
अहो मित्र अहो प्राणनाथ यह अचरज भारी ।। अपने जन को मार करो किन की रखवारी ।।१८६।।
जब पशुचारन चलत चरण कोमल धर वन में ।। शिल तृण कंटक अटकत कसकत हमरे मन में ।।१८७।।
प्रणत मनोरथ करण चरण सरसीरुह पिय के ।। कहा घट जैहे नाथ हरत दुःख हमरे जिय के ।।१८८।।
कहां हमारी प्रीत कहां तुम्हरी निठुराई ।। मणि पाषाण सों खचे दैव सो कछु न बस्यायी ।।१८९।।
जब तुम कानन जात सहस्त्र युग सम बीतत छिन ।।दिन बीतत जिहिं भांत हमहि जाने पिय तुम बिन।।१९०।
जब कानन ते आवत सुन्दर आनन देखे ।। तब यह विधना क्रूर करी धरि नयन निमेषे ।।१९१।।
फनी फनिन पर अरपे डरपे नाहिन नेक तब ।। छबीली छतिन पर धरत डरत क्यों कान्ह कुंवर अब ।१९२।।
ऊपर तुम्हारी कथा अमृत सब पाप सिरावे ।। अमरन अमरा तुच्छ करे ब्रह्मादिक गावे ।।१९३।।
जानत हें पिय तुम जो डरत व्रजराज दुलारे ।। कोमल चरण सरोज उरोज कठोर हमारे ।।१९४।।
सनै सनै पग धरिये हमको अधिक पियारे ।। कित अटवी में अटक गड़त तृण कूर्प अणियारे ।।१९५।।
।। इति रासक्रीडा वर्णने तृतीयोध्याय ।।
यह विधि प्रेम सुधानिधि मग्न व्है करत कलोले ।। विह्वल व्है गई बाल लाल सों अलबल बोलें ।।१९६।।
तब तिनहीं में प्रगट भये नंदनंदन पिय यों ।। दृष्टि बंद कर दुरे बहुर प्रगटे नटवर ज्यों ।।१९७।।
पीत वसन वनमाल धरे मंजुल मुरली हथ ।। मंद मधुर मुसकाय निपट मन्मथ के मन्मथ ।।१९८।।
पियहि निरख त्रिय वृंद उठी सब एक बेर यों ।। फिर आवे घट प्राण बहुर इन्द्री उझकत ज्यों ।।१९९।।
महा क्षुधित को जैसे भोजन सों प्रीत सुनी है ।। ताही ते शत गुणी सहस्त्र किधों कोटि गुनी है ।।२००।।
कोउ चटपट सों कर कपटी कोउ उर वर लपटी ।। कोउ गरे लपटी कहत भले जु भले कान्हर कपटी ।२०१
कोउ नागर नगधर की गहि रही दोउ कर पटकी ।। जनु नवघन ते सटकी दामिनि दामिनि अटकी ।।२०१।।
दौर लपट गई ललित लाल सुख कहत न आवे ।। मीन उछर के पुलिन परे पुनि पानी पावे ।।२०२।।
कोऊ पिय भुज गहि लटक रही नव नार नवेली ।। मनु सुन्दर श्रंगार विटप लपटी छबि वेली ।।२०३।।
कोऊ कोमल पद कमल कुचन पर राख रही यों ।। परम कृपन धन पाय छाती सों लाय रही ज्यों ।।२०४।।
कोऊ पिय रूप नयन भर उर मे धर धर आवत ।। मधुर मिष्ट ज्यों वृष्ट दशो दिश अति छबि पावत ।।२०६।।
कोऊ दशन दिये अधर बिंब गोविन्द हि ताड़त ।। कोऊ एक नयन चकोर चारु मुखचंद निहारत ।।२०७।।
बैठे पुनि तिहि पुलिन मांझ आनंद भयो है ।। छबीली अपनी छालन छबि सों बिछाय दयो है ।।२०८।।
एक एक हरि देव सबै आसन पर बैसें ।। किये मनोरथ पूरन जिनके उपजे जैसें ।।२०९।।
ज्यों अनेक योगेश्वर हिय में ध्यान जु धर ही ।। एक हि बेर एक मूरत सब को सुख बिस्तरही ।।२१०।।

कहूं कज्जल कहूं कुमकुम कहूं पीक लीक बर ।। जहां राजत नंदनंद कोटि कंदर्प दर्प हर ।।२११।।
योगी जन वन जांय यत्न कर कोटि जन्म पचि ।। अति निर्मल करि राखें हिय में आसन रचि रचि ।।२१२।।
कछु छित तहां नहिं जात नवल नागर सुन्दर हरि ।। युवतिन के आसन पर बैठे सुन्दर रुचि करि ।।२१३।।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड यद्यपि इकली ठकुराई ।। व्रज देविन की सभा सांवरे अति छबि पाई ।।२१४।।
ज्यों नवदल मंडल मध्य कमल कर्णिका भ्राजे ।। यों सब त्रियन के सन्मुख सुन्दर श्याम विराजे ।।२१५।।
बूझन लागी नवल बाल नंदलाल पियहि तब ।। प्रित रीत की बात मन में मुसकात जात सब ।।२१६।।
एक भजते को भजे एक बिन भजते भजही ।। कहो कान्ह ते कवन आहि जे दोउन त्यजही ।।२१७।।
यद्यपि जगतगुरु नागर नगधर नंददुलारे ।। तदपि गोपिन के प्रेम विवश अपने मुख हारे ।।२१८।।
तब बोले व्रजराज कुंवर हों ऋणी तिहारो ।। अपने मन तें दूर करो यह दोष हमारो ।।२१९।।
कोटि कल्प लगि तुम प्रति अति उपकार करुं जो ।। हे मनहरणी तरुणि अवनि अरिणी न होउ तो ।।२२०।।
सकल विश्व आप वश कर मोहि माया सोहत है ।। प्रेम भई तिहारी माया सो मोहि मोहत है ।।२२१।।
तुम जो करी सो कोउ न करे सुन नवलकिशोरी ।। लोक वेद की सुदृढ़ श्रृंखला तृण सम तोरी ।।२२२।।
।। इति रासक्रीडा वर्णने चतुर्थोध्याय ।।
सुन पिय को रस वचन सबन रिस छांड दयो है ।। विहंसत अपने कंठन लाल लगाय लयो है ।।२२३।।
कल्पवृक्ष जड़ सुनियत वह चिंतत फलदायक ।। वह व्रजराजकुमार सबे सुखदायक नायक ।।२२४।।
कोटिकल्पतरु वसत लसत पद पंकज छांही ।। कामधेनु पुनि कोटि कोटि लोटत रजमांही ।।२२५।।
सो पिय भये अनुकूल तुल्य कोऊ न भये अब ।। निरवध सुख को मूल सूल उनमूल करी सब ।।२२६।।
तब आये तिहि सुर तरु तर श्रीगिरिवरधर ।। आरंभत अद्भुत सुरास वह कमल चक्र पर ।।२२७।।
एक काल व्रजबाल लाल सब चढे जोर कर ।। नमित न इत उत होय सबै नृत्यत विचित्र वर ।।२२८।।
पुनि दर्पण सम अवनि रवनि तापर छबि देई ।। विलुलित कुंडल अलक तिलक झुक झाई लेई ।।२२९।।
सबके अंसन धरी सांवरे बांह सुहाई ।। एक हि मूरत लसत लाल आलात की नाई ।।२३०।।
कमल कर्णिका मध्य जु श्यामा श्याम बनी छबि ।। दोय दोय गोपिन मध्य मोहनलाल बने फबि ।।२३१।।
मूरत एक अनेक देख अद्भुत शोभा अस ।। मंजु मुकुर मण्डल मध्य विधु आन परत जस ।।२३२।।
सकल त्रियन के मध्य सांवरो प्रिय शोभित अस ।। रत्नावलि मध्य नीलमणि अद्भुत झलके जस ।।२३३।।
नव मरकत मणि श्याम कनक मणि गण व्रजबाला ।। श्रीवृंदावन को रीझ मानो पहराई माला ।।२३४।।
बाजत नूपुर किंकिणी करतल मंजुल मुरली ।। ताल मृदंग उपंग सबै एके स्वर जुरली ।।२३५।।
मृदुल मुरज टंकार तार झंकार मिली ध्वनि ।। मधुर यंत्र की तार भ्रमर गुंजार रली पुनि ।।२३६।।
तैसी मृदु पद पटकन चटकन कठतारन की ।। लटकन मटकन चटकन कंकन कुण्डल हारन की ।।२३७।।
सांवरे पिय संग नृत्यत चंचल ब्रज की बाला ।। जनु घन मंजुल मंडल खेलत दामिनी माला ।।२३८।।
छबीली त्रियन के पाछे आछे विलुलित वेणी ।। चंचल रूप लतन संग डोलत जनु अलिश्रेणी ।।२३९।।
मोहन पियकी मलकन ढलकन मोर मुकुट की ।। सदा बसो मन मेरे फरकन पियरे पट की ।।२४०।।

वदनकमल पर अलक छुरित कछु श्रमकण झलकन ।। सदा रहो मन मेरे मोर मुकुट की ढलकन ।।२४१।।
कोउ सखी कर पर तिरप बांध नृत्यत छबीली त्रिय ।। मानो करतल लटू करत देख लटू होत पिय ।।२४२।।
कोउ नायक के भेद भाव लावण्य रूप बस ।। अभिनय कर दिखरावत गावत गुण पियके अस ।।२४३।।
तब नागर नंदलाल चाहत चित चकित भये यों ।। निज प्रतिबिंब विलास निरख शिशु भूल रहत ज्यों ।।२४४।
रीझ परस्पर वारत अंबर आभरण अंग के ।। अवर तहीं बन रहत तहां अद्भुत रंग रंग के ।।२४५।।
कोउ मुरली संग जुरली रंगीली रसहि बढावत ।। कोउ मुरली को छेक छबीली अद्भुत गावत ।।२४६।।
ताहि सांवरो कुंवर रीझ हंस लेत भुजन भर ।। चुम्बन कर मुख सदन वदन तें दे तंबोल ढर ।।२४७।।
जग में जो संगीत रीत सुर नर रिझवत जिहि ।। सो व्रज त्रियन को सहज गमन आगम गावत तिहि ।।२४८।।
जो व्रजदेवी निर्तत मंडल रास महा छवि ।। सो रस कैसे वरण सके यहां एसो को कवि ।।२४९।।
राग रागिनी समझन को जो बोलवो सुहायो ।। सो कापे कहि आवे जो व्रज देविन गायो ।।२५०।।
पिय ग्रीव भुज मेलि केलि कमनीय बढी अति ।। लटक लटक के निर्तत कापे कहि आवे गति ।।२५१।।
छबि सों निर्तत मटकन लटकन मंडल डोलत ।। कोटि अमृत सम मुसकन मंजुल ता थेई बोलत ।।२५२।।
कोउ उनते अति गावत सुलप ले नई नई ।। सब संगीत जु छेके सुन्दर गान करत भई ।।२५३।।
आप अपनी गति भेद तहां नृत्य करत तब ।। गंधर्व मोहे तिहि क्षण सुन्दर गान करत जब ।।२५४।।
भुज दण्डन सों मिलत ललित मंडल निर्तत छबि ।। कुंडल कुच सों उरझे मुरझ रहे तहां बडरे कवि ।।२५५।
पिय के मुकुट की लटकन मुरली नाद भई अस ।। कुहुक कुहुक यों बाजत मंजुल मोर भरे रस ।।२५६।।
सिरते कुसुमन सुन्दर बरखत अति आनंद भर ।। जनु पद गति पर रीझ अलक पूजत फूलन कर ।।२५७।।
श्रम जल बिन्दु सुन्दर रंग भर कहुं कहुं बरखत ।। प्रेम भक्त विरला जिनके तिनके हिय सरसत ।।२५८।।
श्रीवृन्दावन को त्रिविध पवन व्यजना सो विलोले ।। जहां जहां श्रम अवलोकत तहां तहां रस भर डोले ।२५९
उडु नव अरुन अबीर अद्भुत शशि मंडल ऐसे ।। प्रेम जाल के गोलक कछु छबि उपजत जैसे ।।२६०।।
कुसुम धूंधरी कुंज मत्त मधुकर निवेश तहां ।। ऐसे हुलसत आवत ग्रीवन लटक केश तहां ।।२६१।।
नवपल्लव की श्रेणी अति सुखदेनी दरसे ।। सुन्दर सुमन सुनिरखत अति आनंदहि बरसे ।।२६२।।
पवन थक्यो शशि थक्यो थक्यो उडुमंडल सगरो ।। पाछे रवि रथ थक्यो चल्यो नहिं आगे डगरो ।।२६३।।
विहरत रति अविरुद्ध युद्ध सुरत रस सागर ।। उज्जवल प्रेम उजागर नागर सब गुण आगर ।।२६४।।
हार हार में उरझ उरझ बहियां मे बहियां ।। नील पीत पट उरझ उरझ नथवेसर महियां ।।२६५।।
श्रम भरे सुन्दर अंग सरस अति मिलत ललित गति ।। अंसन पर भुज दिये लटक शोभा शोभित अति ।२६६
टूटी मुक्तामाल छूट रही सांवरे उर पर ।। मानों गिरि तें सुरसरि द्वै विधि धार धंसी धर ।।२६७।।
अद्भुत रस रह्यो रास गीत ध्वनि सुन मोहे मुनि ।। शिला सलित व्है चली सलिल वहै रही शिला पुनि ।।२६८
रीझ शरद की रजनी न जनि किति एक बाढी ।। विलसत सजनी श्याम यथा रुचि अति रति गाढी ।।२६९।।
यह विध विविध विलास विलस सुख कुंज सदन के ।। चले यमुना जल क्रीडन व्रीडन कोटि मदन के ।।२७०
उरसो मरगजी माल चाल मत गज गति मलकत ।। घूमत रस भरे नयन गंड स्थल श्रमकण झलकत ।।२७१।

धाय यमुन जल धसे लसे छबि परत न वरणी ।। विहरत जनु गजराज संग लिये तरुणी करिणी ।।२७२।।
त्रियन के तन झलमलत वदन तहां अति छबि पाये ।। फूर रहे जनु यमुना कनक के कमल सुहाये ।।२७३।।
मंजुल अंजली भर भर पिय के तिय जल मेलत ।। जानो अली अरविंद वृंद मकरन्दहि खेलत ।।२७४।।
छिरकत छल सो छेल जो मंजुल अंजली भर भर ।। अरुण कमल मंडली फाग खेलत जनु रंग कर ।।२७५।।
रुचिर दृगंचल चंचल अंचल वर जगमग अस ।। सरस कनक के कंजन खंजन जाल परत जस ।।२७६।।
यमुना जल में दुरमुर कामिनि करत कलोले ।। मानों नवघन भीतर दामिनि दामिनि डोले ।।२७७।।
कमलन त्यज अलिगन मुख कमलन ढिंग जब आवत।।छबि सों छबीलो छेल भेट तिन छिनहि उड़ावत।२७८
कबहुंक मिली सब बाल लाल छिरकत छबि सो अस ।। मनसिज पायो राज आज अभिषेक होत जस ।।२७९
तिनकी सुन्दर कांति भांत मनमोहन भावे ।। बालवेश छबि पैहे कछुहु कहत न आवे ।।२८०।।
भीज वसन तन लपटे अद्भुत छबि कहा कहिये ।। नयनन को नहि बेन बेन को नयन नहीं ये ।।२८१।।
चीर निचोवत युवती नीर देख भये अधीर मन ।। तन बिछुरन की पीर चीर रोवत असुवन जन ।।२८२।।
तब एक द्रुम तन चितय कुंवर वर आज्ञा दीनी ।। निरमल अंबर भूषण तिनही वर्षा कीनी ।।२८३।।
अपनी अपनी रुचि के पहरे वसन बने तब ।। जग में जे मोहन आये तिनकी मोहनी सब ।।२८४।।
यह शरद की जितयक परम मनोहर राती ।। खेलत रास रसिक पिय प्रतिक्षण नईनई भांति ।।२८५।।
ब्राह्ममुहूर्त कुंवर कान्ह सब घर आये जब ।। गोपन अपनी गोपी अपने ढिंग मानी तब ।।२८६।।
नित्य रास रसमत्त नित्य श्रीगोपीजनवल्लभ ।। नित्य निगम जो कहियत नित्य नौतन अति दुर्लभ ।।२८७।।
यह अद्भुत रस रास कहत कछु कहत न आवे ।। शेष सहस्त्र मुख गावत अजहु पार न पावे ।।२८८।।
शिव मन ही मन धावे काहू नाही जनावें ।। सनक सनन्दन नारद शारद अति मन भावे ।।२८९।।
यद्यपि यह पद कमला अमला सेवित निशदिन ।। यह रस अपने सपने कबहूं नाहिन पायो तिन ।।२९०।।
अज अजहू रज वांछत सुन्दर वृन्दावन की ।। सोऊ तनक न पावत शूल मिटत नहिं मन की ।।२९१।।
बिन अधिकारी भये न श्रीवृन्दावन सूझे ।। रैन कहां ते सूझे जब लग वस्तु न बूझे ।।२९२।।
निपट निकट घट घट में जो अंतर्यामी आही ।। विषय विदूषित इन्द्रिय पकर सकत नहिं ताही ।।२९३।।
जो यह लीला हित सो गावे सुने सुनावे ।। प्रेम भक्ति सोई पावे सबके जियमें भावे ।।२९४।।
हीन अश्रद्धा निंदक नास्तिक धर्म बहिर्मुख ।। तिनसों कबहुं न कहिये कहे तो नाहिन लहे सुख ।।२९५।।
भक्त जनन सो कहो जिनके श्रीभागवत धर्म बल ।। ज्यो यमुना के मीन लीन नित रहत यमुन जल ।।२९६।।
यद्यपि सप्त निधि भेदत यमुना निगम बखाने ।। ते तिहि धारहि धार रमत छुवत न जल जाने ।।२९७।।
रसिक जनन के संग रहे हरि लीला गावे ।। परम कांत एकांत परम रस सोई पावे ।।२९८।।
यह उज्जवल रस माला कोटि यत्न कर पोई ।। सावधान होय पहरो जिने तोरो मत कोई ।।२९९।।
श्रवण कीर्तन सार सार सुमरण को है पुनि ।। ज्ञान सार हरि ध्यान सार श्रुति सार गूंथि गुन ।।३००।।
अघ हरणी मन हरणी सुन्दर प्रेम विस्तरनी ।। नंददास के कंठ बसो नित मंगल करनी ।।३०१।।